महावीराष्टक स्तोत्र (भाषा)

चेतन अचेतन तत्व देते है, अनन्त जहान में।
उत्पाद व्यय ध्रुवमय मुकुरवत्, लसत जाके ज्ञान में।
जो जगतदरशी जगत में सन्मार्ग दर्शक रवि मनो।
ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगाामी बनो।।१।।

टिमिकार बिन युग कमल लोचन, लालिमा तैं रहित हैं।
बाह्य अन्तर की क्षमाको, भविजनों से कहत हैं।
अति परम पावन शान्तिमुद्रा, जासु तन उज्ज़वल घनो।
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनों।।२।।

जिहिं स्वर्गवासी विपुल सुरपति नम्र तन वह नमत हैं।
तिन मुकुटमणि के प्रभा मंडल पद्म पद में लसत है।
जिन मात्र सुमरन रुप जल से, हनै भव आतप घनो।
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।३।।

मन मुदित हैं मंडुक ने प्रभु पूजवे मनसा करी।
तत्छन लही सुर सम्पदा, बहुऋद्धि गुणनिधि सों भरी।।
जिहिं भक्ति सों सद्भक्तजन लहँ, मुक्तिपुर को सुख घनों।
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।४।।

कंचन तपतवत ज्ञाननिधि हैं, तदपि ज्ञान वर्जित रहें।
जो हैं अनेक तथापि इक, सिद्धार्थ सुत भव रहित हैं।
जो वीतरागी गति रहित हैं, तदपि अदभुत गतिपनो।
ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगामी बनो ।।५।।

जिनकी वचन मय अमल सुरसरि,विविध नय लहरैं धरैं।
जो पूर्ण ज्ञान स्वरूप जल से, न्हवन भविजन को करैं।।
तामैं अजों लगि घने पंडित, हंस ही सोहत मनों।
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो ।।६।।

जाने जगत की जंतु जनता, करी स्ववश तमाम है।
है वेग जाको अमिट ऐसी, विकट अतिभट काम है।।
ताको स्वबल से प्रोढ़वय में शान्ति शासन हित हनो।
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो ।।७।।

भयभीत भव में साधुजन को शरण उत्तम गुण भरे।
नि:स्वार्थ के ही जगत बाँधव, विदित यश मंगल करें।।
जो मोह रूपी रोग हनिवे वैद्यवर अद्‌भुत मनों।
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो ।।८।।

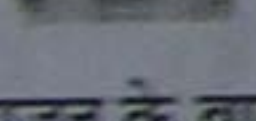

दोहा

महावीर अष्टक रच्यो, भागचन्द रुचि ठान।
पढ़े सुनें जो भाव सों, ते पावे निरवान।।

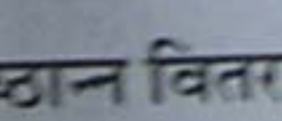

पूजन के बाद याचाको को दान, सज्जनों का सम्मान, सेवकों को मिष्ठान्न वितरण आदि देशरीति अनुसार करना चाहिये और व्यवहारियों को उत्सव मनाने के समाचार पत्रों द्वारा भेजना चाहिये। नोट :- जिन्हें अन्तराय कर्म प्रबल हो वे रात्रि में 'जिन-सहस्त्र नाम' का पाठ अवश्य करें। नूतन वर्ष का प्रभात मंगलमय हो इसके लिये सर्व सज्जनों को १०८ बार णमोकार मन्त्र का शुद्ध भावों से जाप करना चाहिये।